UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Refereed Monthly Journal : Drawing & Painting
Research Link - 169, Vol - XVII (2), April - 2018, Page No. 118-119
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

रामकिंकर बैज और उनकी कला

प्रस्तुत शोधपत्र आधुनिक मूर्तिकला के सुप्रसिद्ध कलाकार रामकिंकर बैज और उनकी मूर्तिकला को लेकर लिखा गया है। रामकिंकरजी आधुनिक मूर्तिकला के पथ-प्रदर्शन रहे हैं। उन्होंने युवा पीढ़ी का कला क्षेत्र की अनेक दिशाओं में मार्गदर्शन किया। उस समय यहाँ तक कि पेरिस ऑफ प्लास्टर कलकत्ता से लाना पड़ता था, यह आयात किया जाता था और बहुत महंगा होता था। रामकिंकरजी ने सीमेण्ट, क्रांकीट ढलाई में पेरिस ऑफ प्लास्टर का एक विकल्प ढूंढ़ निकाला था। मूर्ति बनाने वालों से संकेत लेकर उन्होंने साधारण बांस का एक ढांचा तैयार किया और उसे गीली मिट्टी व गोबर से प्लास्टर किया और अंत में तारकोल से पोत दिया, जैसे कि नन्दलाल बोस अपनी उभरी हुई आकृतियों में किया करते थे। उन्होंने लोहे की छड़ों और स्थानीय खोवाई नदी से प्राप्त रोड़ों से युकत सीमेण्ट के मिश्रण का प्रयोग करना शुरु कर दिया। इन्होंने इसमें वृहद् आकार की मूर्तियों की सृजना की। तकनीकि दृष्टि से इससे मूर्तिकला की एक नई विधा का द्वार खुल गया।

डॉ.शिव कुमार

बाकुंडा जिले की संस्कृति का बंगाल में एक विशिष्ट स्थान है। भौगोलिक दृष्टि से यह बिहार की चट्टानों तथा गंगा की भूमि का सम्मिलन स्थल है। यहाँ से पश्चिम में सांथाल, उत्तर में मल्ल तथा पूर्व में हिन्दू रहते हैं। बांकुडा इन सबका सम्मिलन स्थल है। इनमें बौद्ध, वैष्णव तथा शाक्त प्रभाव प्रमुख रहे हैं। सर्प नदी, शिवशक्ति मातृ देवियों की पूजा अनेक विधियाँ भी यहाँ प्रचलित हैं, जो स्थानीय लोक विश्वासों तथा शास्त्रीय मान्यताओं का मिला–जुला रूप है। पश्चिम बंगाल के बांकुडा जिले के जुग्गीपाडा कस्बे में रामकिंकर बैज का जन्म 25 मई, सन् 1906 में हुआ था। इनके पिता श्री चण्डी चरण बैज थे, इनकी माता का नाम सम्पूर्णा देवी था। वह चण्डी चरण और सम्पूर्णा देवी की दूसरी संतान थे। इनकी चार बहनें और दो भाई थे। बचपन में बहुत पहले से ही उन्हें कला में अत्याधिक रुचि थी। उनका सृजनात्मक व कलात्मक दृष्टिकोण उनके व्यक्तित्व में परिलक्षित होता है। वह स्वाध्याय से चित्रकार व मूर्तिकार थे, परन्तु एक पडौसी मूर्तिकार अन्नत सूत्रधार को वे अपना कला शिक्षक मानते थे।[1] उनका झुकाव बचपन से ही कला के प्रति था। बांकुडा अपने लोक कला, जैसे टैराकोटा के मन्दिरों, मूर्तियों और चित्रकारी के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा है। स्थानीय कला का बैज के ऊपर बडा प्रभाव पड़ा। लोक कलाओं और लोक धरोहरों से प्रभावित होकर वे प्रतिलिपियाँ, चित्र और मिट्टी से गढ़कर आकृतियाँ बनाने लगे। तकरीबन उनकी उम्र 16–17 वर्ष रही होगी, जब भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन अपने चरम पर था। तब बैज ने प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानियों के सबीह रेखाचित्र बनाये।

उनके चित्र सजीव प्रतीत होते थे और उनकी रेखाओं में एक अलग तरह की ऊर्जा होती थी, जो कि बिना तालीम लिए किसी के हाथों में दिखना दुर्लभ था। उनके इसी जन्मजात गुण को देखते हुए प्रख्यात बंगाल पत्र का रामानन्द चटर्जी ने उन्हें शान्ति निकेतन में दाखिले के लिए प्रेरित किया। शान्ति निकेतन का स्वतन्त्र वातावरण उनके जैसे व्यक्तित्व के लिए अनुकूल साबित हुआ। रविन्द्र नाथ टैगोर ने शान्ति निकेतन की स्थापना कला और शिक्षा में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और आधुनिकता को सार्थक आयाम देने के लिए ही की थी। नन्दलाल बोस जैसे महान कला मनीषी और शिक्षक के सान्निध्य में बैज ने कला में डिप्लोमा अर्जित किया। उनके कला ज्ञान और प्रयोगात्मक अनुभव को देखकर शान्ति निकेतन के मूर्ति कला विभाग में प्रमुख के पद पर कार्य करने का निमन्त्रण उन्हें मिला। नन्दलाल बोस तथा विनोद बिहारी मुखर्जी के साथ मिलकर इन्होंने शान्ति निकेतन को कला के क्षेत्र का अग्रणी संस्थान बनाया, जहाँ पारम्परिक शिक्षा के अलावा व्यक्तिगत विकास पर ज्यादा ध्यान दिया जाता था।[2]

रामकिंकर बैज कला में नवीनता के लिए हमेशा प्रयासरत रहे और नित नये प्रयोग भी करते रहे। वे भारत के पहले कलाकार थे, जिन्होंने सीमेण्ट और कंक्रीट में कार्य किया। उनसे पहले पत्थर, मिट्टी, लकड़ी और धातु ही मूर्ति कला के प्राचीनतम माध्यम थे। मूर्ति कला के अलावा इन्होंने चित्रकला में भी नवीन प्रयोग किए। जल रंग के साथ–साथ तैल रंग में भी इनका हाथ सधा हुआ था। उस समय शान्ति निकेतन में तैल रंगों में चित्रण नहीं बनते थे, जो उपलब्ध थे, वो कीमती थे और बाहर से आते थे। बाहर के कीमती रंगों के विकल्प के रूप में इन्होंने लिंसिड ऑयल के साथ बाजार में उपलब्ध रंगों को मिलाकर अपने तरीके का तैल रंग बनाया। मुख्यतः लैण्डस्केप और कम्पोजिशन विधा में काम करने वाले बैज के चित्रों में उनकी मूर्ति कला की झलक दिखाई देती है और उनके चित्र उभरे हुए और लहरिया रेखाओं से उकेरित गतिमान प्रतीत होते हैं। इसका जीवन्त उदाहरण उनके "मिलकॉल" और सांथाल परिवार और परिवेश पर बने चित्रों में दिखाई देता है।[3]

म. नं. 2 बी-3013, प्रद्युम्मन नगर, निकट जे.वी.जैन कॉलेज, सहारनपुर (उत्तरप्रदेश)

रामकिंकर बैज मूलतः मूर्तिकार थे, किन्तु उन्होंने चित्रकारी भी बहुतायत में की। मूर्ति शिल्प के अन्तर्गत उन्होंने सीमेण्ट, कंक्रीट, पत्थर, कांस्य, प्लास्टर ऑफ पेरिस आदि सभी प्रमुख माध्यमों में कार्य किया। लैम्प स्टैण्ड, महात्मा गाँधी, सांथाल परिवार, यक्ष–यक्षी, सुजाता, अनाज की औसाई आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ विश्वविख्यात हैं। उनकी मूर्तियाँ प्रायः हृष्ट–पुष्ट, गतिशील, प्रफुल्लित, जीवन शक्ति से भरपूर एवं जोशीले भाव वाली हैं जो विशेषताएँ रामकिंकर के मूर्तिशिल्प की आकृतियों, विषयवस्तु एवं भाव स्पन्दन में मूर्तियाँ हुई हैं वही विशेषताएँ उनके चित्रों, रेखांकनों में भी उभर कर आई हैं। रामकिंकर ने आरम्भ में लघु चित्र बनाए, किन्तु शीघ्र ही उन्होंने तैल रंगों में कार्य प्रारम्भ कर दिया।[4]

वे प्रयोगवादी एवं अत्यन्त स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनकी कला में यह दोनों ही प्रमुख तत्व के रूप में उभर कर आती हैं। रामकिंकर बैज ने शान्ति निकेतन व आसपास में चल रही कला और कला प्रवृत्तियों को दर किनार करके अपनी स्वेच्छा से कला सृजन करना एवं सामग्री अथवा माध्यम का चुनाव करने की ठानी।[5] रामकिंकर बैज नन्दलाल बसु के शिष्य थे, किन्तु स्वच्छन्द व फक्कड स्वभाव के कारण बंगाल स्कूल की परम्पराओं से दूर ही रहे। यद्यपि वे जीवन भर शान्ति निकेतन में ही रहे। कलकत्ता में पुनरोत्थान शैली के विरोध में आधुनिक कला–पद्धतियों को अपनाने का निश्चय करके एक कलाकार मण्डल बनाया, जिसमें रामकिंकर, अवनी सेन, सुनील माधव सेन आदि शामिल हुए। बैज ने एक समय तक जल रंगों में अत्याधिक चित्रों की रचना की। रामकिंकर बैज अपने जल रंग चित्रों में हल्के तथा कम रंग लगा कर ही विषय की रूपरेखा को उभार दिया करते थे। वे अपने चित्रों, आकारों को गहरे रंगों में तीव्र गति से अंकित की गई रेखाओं के द्वारा साकार किया करते थे। उन्होंने व्यक्ति चित्र, प्राकृतिक दृश्य, दैनिक कार्य दृश्य चित्रों, जंगली व पालतू जानवर आदि को अपने जल रंग चित्रों के विषय के रूप में लिया। उन्होंने स्वयं कहा है कि – मैंने यह सब अपने पानी के रंगों के प्राकृतिक दृश्यों में पकड़ा है। खुले मैदान, झरने, भू–दृश्य, चाँदनी में एक अकेला पतला वृक्ष, विभिन्न मौसमों में विभिन्न स्वभावों का विकीर्ण मेरे पसन्द के विषयों में है और वे मेरे पेन्टिंग्स में रहते हैं।[6]

रामकिंकर आधुनिक मूर्ति कला के पथप्रदर्शक थे। उन्होंने युवा पीढ़ी का कला क्षेत्र की अनेक दिशाओं में मार्गदर्शन किया। उस समय यहाँ तक कि पेरिस ऑफ प्लास्टर कलकत्ते से लाना पड़ता था, यह आयात किया जाता था और बहुत मंहगा होता था। रामकिंकर ने सीमेण्ट, कंक्रीट ढलाई में पेरिस प्लास्टर का एक विकल्प ढूँढ निकाला। मूर्ति बनाने वालों से संकेत लेकर उन्होंने साधारण बांस का एक ढांचा तैयार किया और उसे गीली मिट्टी व गोबर से प्लास्टर किया और अन्त में तारकोल से पोत दिया, जैसे कि नन्दलाल बोस अपनी उभरी हुई आकृतियों में किया करते थे। उन्होंने लोहे की छड़ों और स्थानीय खोवाई नदी से प्राप्त रोडों से युक्त सीमेण्ट के मिश्रण का प्रयोग करना शुरू कर दिया। इन्होंने इसमें वृहद् आकार की मूर्तियों की सृजना की। तकनीकी दृष्टि से इनमें मूर्ति कला की एक नई विधा का द्वार खुल गया। इस श्रृंखला की पहली कड़ी पतली और लम्बी सुजाता की प्रतिमा थी और इसके बाद आदमकद से बड़े आकार की मूर्तियों वाली सांथाल परिवार नामक मूर्ति कला थी, जो हमारे समय की भारतीय मूर्ति कला की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है। शायद इसके मुकाबले की कहीं भी कोई ओर अन्य कलाकृति नहीं है। इस कलाकृति के निर्माण की तीव्र उमंग से उत्प्रेरित रामकिंकर ने नए माध्यमों के प्रयोग में सफलता प्राप्त करने के दृढ़ संकल्प से अनुप्राणित होकर तथा आकाश के नीचे खुली हवा में अति विशाल मूर्तियाँ बनाने तथा उन्हें सुस्थापित करने की महत्वाकांक्षा के वशीभूत होकर तपते हुए सूर्य की प्रचण्ड गर्मी में किसानों का स्ट्रॉ हैट पहने हुए मास के बाद मास निरन्तर उक्त कलाकृतियों के निर्माण में रत रहे। यदि उक्त माध्यमों से निर्मित प्रतिमाएँ नये सिरे से देखने पर निष्पक्ष परख की कसौटी पर खरी नहीं उतरती तो अगली सुबह वे अनायास उन्हें तोड़कर गिरा देते और फिर नये सिरे से मूर्ति निर्माण का कार्य करते। धीरे–धीरे उनकी मूर्ति कला की आन्तरिक संरचना ने उसके बाहय और आकारगत निरूपण को अभिभूत कर दिया। शनैः शनैः यह कला साधना महत्वपूर्ण और अमूर्त की ओर अग्रसर हुई। अतिथि गृह के सामने रंगीन सीमेण्ट की पालिश की हुई चमकीली मूर्ति कला और रविन्द्रनाथ का अमूर्त रूप चित्र अमूर्त की ओर इस यात्रा का प्रथम उदाहरण है।[7] चित्रकला के क्षेत्र में सौन्दर्यपरक्ता सम्बन्धित विवाद मूर्तिकला के क्षेत्र में नहीं था। मूर्ति कला में आपके समक्ष या तो बम्बई के कर्मकारों के चित्र थे या फिर रूढ शैलीगत मुद्राओं में देवी–देवताओं की कुमार तुली में निर्मित प्रतिमाएँ थीं, जो वैसी ही श्रद्धा और आदर की पात्र हैं।

रामकिंकर इसी आत्म विश्वास के साथ अपना काम करते रहे। उनकी वे कृतियाँ आने वाले समय में जो अनुवर्तित पीढ़ियों को शायद अधिक प्रेरित कर सकेंगी, क्योंकि अगर किसी देसी कलाकार और देसी मानसिकता के साथ आपको मौलिक काम करना है, तो शायद रामकिंकर से बढ़कर आपका कोई पथप्रदर्शक नहीं। मूर्तियों और चित्रों के स्लाइड्स तो बहुत हैं, पर उन पर अलग–अलग ढंग से कई काल खण्डों में विचार किया जा सकता है। उन शैलियों के विशेषज्ञ अगर इन पर ज्यादा प्रकाश डालें जैसे कोई प्रिन्ट मेकर उनके प्रिन्ट के बारे में बताये, कोई मूर्तियों के बारे में बताये, कोई उनके चित्रों के बारे में बताये, रेखांकनों के बारे में बताये तो उनकी कलाकृतियों के साथ और अधिक न्याय हो सकेगा।

सन्दर्भ :

(1) बैज, रामकिंकर : बर्थ सैन्चुरी, ललित कला एकेडमी, रीजनल सैन्टर, भुवनेश्वर, पृष्ठ 9.

***(2)** निशान्त का आलेख – कला और कलाकार, www.abhivyakti-hindi.org*

***(3)** निशान्त का आलेख – कला और कलाकार, www.abhivyakti-hindi.org*

***(4)** अग्रवाल, गिरीराज किशोर : आधुनिक चित्रकला, ललित कला प्रकाशन, 27–ए, साकेत कॉलोनी अलीगढ, पृष्ठ 75.*

***(5)** अग्रवाल, गिरीराज किशोर : आधुनिक चित्रकला, ललित कला प्रकाशन, 27–ए, साकेत कॉलोनी अलीगढ, पृष्ठ 75.*

***(6)** सैल्फ पोट्रेट, पृष्ठ 58.*

***(7)** Chaudhary, Shanku : An Annual on Art and Aesthetics Vol. XXV, 2005.*

❁❁